परात्पर गुरु डॉक्टरजीका अद्वितीय कार्य : खण्ड १

परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीके सर्वांगीण कार्यका संक्षिप्त परिचय

卐 卐

ग्रन्थमालाकी संयुक्त भूमिका

१. परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजी : अखिल मानवजातिके उद्धार हेतु कार्यरत अलौकिक विभूति !

'ज्ञानियोंके राजा । गुरु महाराज ।।' ऐसा जिनका वर्णन किया जा सकता है, वे हैं सनातन संस्थाके संस्थापक परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजी ! आप धर्म, कला, भाषा, राष्ट्ररक्षा, धर्मजागृति आदि विषयोंपर विपुल ग्रन्थ लिखनेवाले 'ज्ञानगुरु' हैं; शीघ्र ईश्वरप्राप्तिके लिए साधनाका सरल मार्ग 'गुरुकृपायोग'की रचना कर, साधकोंको कालानुरूप साधना सिखानेवाले 'मोक्षगुरु' हैं और 'विश्वकल्याणके लिए सत्त्वगुणी लोगोंका 'ईश्वरीय राज्य' (हिन्दू राष्ट्र, सनातन धर्म राज्य) अनिवार्य है', ऐसा उद्घोष सर्वप्रथम करनेवाले 'राष्ट्रगुरु' हैं । हिन्दू समाज, राष्ट्र और धर्म के उत्कर्षका अदम्य ध्येयवाद आपके आचार-विचार से क्षण-प्रति-क्षण परिलक्षित होता है । इसीलिए अनेक हिन्दुओं, हिन्दुत्वनिष्ठों, धर्मप्रचारकों और सन्तोंको आप 'धर्मगुरु' प्रतीत होते हैं । उनसे देश-विदेश के विभिन्न पन्थियोंको हिन्दू धर्मका महत्त्व ज्ञात होता है और साधनाके विषयमें अमूल्य मार्गदर्शन मिलता है; इसलिए वे 'जगद्गुरु' भी हैं । उनके जितना सूक्ष्म-जगतके विषयमें अध्ययन, शोधकार्य और मार्गदर्शन करनेवाला व्यक्ति आज विश्वमें कदाचित कोई नहीं; इस दृष्टिसे वे 'सूक्ष्म-जगत्के शोधगुरु' हैं ! ऐसे परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीके अलौकिक

卐 卐

कार्यके अनेक पहलू, 'परात्पर गुरु डॉ. जयंत आठवलेजीका अद्वितीय कार्य', नामक ग्रन्थमालामें विस्तारसे बताए गए हैं ।

परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीके सर्वस्पर्शी कार्यको एक ग्रन्थमें समेटना असम्भव है । इसलिए उनके एक-एक कार्य और उनकी विशेषताओंसे परिचित करानेवाले ग्रन्थ इस ग्रन्थमालामें प्रकाशित कर रहे हैं ।

२. प्रचलित सन्तचरित्रोंकी तुलनामें इस ग्रन्थमालाका महत्त्व

प्रचलित सन्तचरित्रोंमें सन्तोंके पृथ्वीपर किए स्थूल कार्यका वर्णन होता है । इस ग्रन्थमालामें भी परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीकी साधना, अध्यात्मप्रसारका कार्य, उनकी सीख, देश-विदेशके जिज्ञासुओंको उनसे मिला मार्गदर्शन आदि है । इसके साथ ही, इसमें उनके सूक्ष्म स्तरपर किए हुए कार्यपर भी प्रकाश डाला गया है; उदाहरण उनके द्वारा सूक्ष्म आयाममें किया युद्ध, साधकोंपर किए आध्यात्मिक उपचार, उनके संकल्पसे हुए कार्य, अस्तित्वसे हुए कार्य । इस विवेचनसे जिज्ञासुओंके लिए समझना सरल होगा कि सन्तोंका सूक्ष्मरूपमें होनेवाला आध्यात्मिक कार्य कैसा होता है । परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीद्वारा अखिल मानवजातिके कल्याणार्थ किया यह प्रत्येक स्थूल और सूक्ष्म स्तरीय कार्य, अध्यात्म सीखनेवालोंके लिए एक-एक अध्याय ही है ।

३. परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजी ही प्रेरणास्रोत एवं मार्गदर्शक !

परात्पर गुरु डॉ. जयंत आठवलेजीने इस ग्रन्थमालाके लिए स्वयं संकलित लेख, अपने पत्राचार, कागदपत्रोंकी संचिकाएं (फाइल्स), संगणकमें संचित लेख, अपने पासके छायाचित्रोंका संग्रह आदि ज्ञानभण्डार उपलब्ध कराया । उन्होंने समय-समय पर मार्गदर्शन भी किया कि 'कौन-सा लेख किस भागमें लेना है ।' कार्यके

सम्पूर्ण परिचयके लिए आवश्यक जानकारी भी उन्होंने समय-समय पर लिखकर दी । इतना ही नहीं, प्रत्येक ग्रन्थका लेखन होनेपर, उसकी त्रुटियां दिखाईं तथा सम्पादित किए लेख भी जांचे । उनसे प्रेरणा और मार्गदर्शन मिलनेपर ही ग्रन्थमालाका प्रकाशन हो पाया ।

४. ग्रन्थमाला संकलनकी सीमाएं

परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीके ज्ञात कार्यकी स्थूलरूपमें दिखाई देनेवाली भव्यता, उनके सूक्ष्म-स्तरीय कार्यकी तुलनामें अत्यल्प है । सूक्ष्म आयाममें उनका अज्ञात कार्य, विशेषतः सूक्ष्म स्तरीय युद्ध, ज्ञानशक्तिके कार्य, तथा उनके अस्तित्व (उपस्थिति) से होनेवाले कार्य शब्दातीत हैं । उन्हें शब्दोंमें व्यक्त करनेकी भी सीमा है । इस कार्यके विषयमें वे स्वयं ही बता सकते हैं !

५. 'ग्रन्थमालाका उद्देश्य सफल हो', यह श्री गुरुसे प्रार्थना !

महर्षियोंने सहस्रों वर्ष पहले लिखे नाडीभविष्यमें (नाडी-पट्टिकाओंमें) लिखा है, 'परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजी वर्तमान कलियुगमें श्रीविष्णुके अवतार हैं !' ऐसे परात्पर गुरुके मार्गदर्शनमें हम साधना करेंगे, तो हमारी आध्यात्मिक उन्नति शीघ्र होगी तथा हिन्दू राष्ट्रकी स्थापना भी निश्चित ही होगी ! सनातनके साधकोंकी हो रही शीघ्र आध्यात्मिक उन्नति और हिन्दू राष्ट्रकी स्थापनाके लिए सर्वत्रके राष्ट्रप्रेमियों, धर्मप्रेमियों और हिन्दुत्वनिष्ठों का हो रहा प्रभावी संगठन इस बातका प्रमाण है ।

'इस ग्रन्थमालासे जिज्ञासुओं और साधकों को परात्पर गुरु डॉ. जयंत आठवलेजीकी महत्ता समझमें आए, तथा उनके मार्गदर्शनमें साधना करनेकी प्रेरणा मिले तथा प्रत्येक व्यक्तिके जीवनका उद्धार हो', यह श्री गुरुसे प्रार्थना !

– श्री. चेतन धनंजय राजहंस, प्रवक्ता, सनातन संस्था.

प्रस्तुत ग्रन्थकी भूमिका

परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीके अलौकिक कार्यके व्यापक स्वरूपको देखते हुए ग्रन्थमाला‘परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीका अद्वितीय कार्य’ का एक-एक ग्रन्थ बननेमें थोडा विलंब हो सकता है; परन्तु प्रस्तुत ग्रन्थसे उनके सर्वांगीण कार्यकी व्याप्ति संक्षेपमें ध्यानमें आएगी । एक व्यक्तिसे अल्पावधिमें इतना सर्वव्यापी कार्य होना, यह वैसे तो असम्भव ही है । इस ग्रन्थके कारण परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीकी असामान्यता और आध्यात्मिक क्षेत्रमें उनका सर्वमान्य अधिकार ध्यानमें आएगा । इस ग्रन्थसे अध्यात्मके जिज्ञासु और अभ्यासियोंको अध्यात्मजगत्की ओर देखनेकी एक निराली दृष्टि प्राप्त होगी । विविध सम्प्रदाय एवं राष्ट्र और धर्म हितमें कार्यरत व्यक्तियोंको अपने-अपने क्षेत्रमें कार्य करनेकी प्रेरणा और दिशा इस ग्रन्थसे मिलेगी । सन्त, विशिष्ट सम्प्रदायका पालन करनेवाले व्यक्ति, देशभक्त, धर्मप्रेमी, हिन्दुत्वनिष्ठ एवं सामाजिक कार्यकर्ताओंका कार्यके अनुषंगसे सुसूत्र और नियोजनबद्ध संगठन होनेमें सहायता भी मिलेगी । वे अपनी प्रकृतिके अनुरूप ‘साधना’के रूपमें इस कार्यमें योगदान भी दे सकेंगे । इस प्रकार धर्मका पुनरुत्थान एवं हिन्दू राष्ट्रकी स्थापनाके कार्यको बल मिलेगा ।

‘इस चरित्रग्रन्थके अभ्याससे अधिकाधिक लोगोंको साधना हेतु प्रेरणा मिले और वे ईश्वरप्राप्ति करें’, ऐसी श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है ! – **संकलनकर्ता**

पढें सनातनका ग्रन्थ !

हिन्दू राष्ट्र क्यों आवश्यक है ?

- भारत स्वयंभू ‘हिन्दू राष्ट्र’ है !
- धर्मनिरपेक्ष लोकतन्त्रकी निरर्थकता !
- विश्वमें असफल हुईं विविध राज्यप्रणालियां !

अनुक्रमणिका

[कुछ वैशिष्ट्यपूर्ण सूत्र (मुद्दे) '*' चिन्हसे दर्शाए हैं ।]

१. परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीका जन्म और उनका आध्यात्मिक वृत्तिसम्पन्न परिवार २२

२. छात्र जीवनमें किया कार्य २३

३. चिकित्सा क्षेत्रमें शोधकार्य २४

४. सम्मोहन-उपचार क्षेत्रमें शोधकार्य तथा अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिके सम्मोहन-उपचार विशेषज्ञ २५

५. अध्यात्मशास्त्र सीखनेके लिए किए गए प्रयास और गुरुप्राप्ति २८

६. अध्यात्मप्रसारका कार्य २८

६ अ. परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीद्वारा 'सनातन भारतीय संस्कृति संस्था'के माध्यमसे स्वयं किया कार्य २९

६ आ. 'सनातन संस्था'के माध्यमसे किया जा रहा कार्य ३०

७. साधकोंकी आध्यात्मिक उन्नतिकी दृष्टिसे किया गया कार्य ३१

* 'गुरुकृपायोग' नामक साधनामार्गकी निर्मिति ३१

८. ग्रन्थ-निर्मिति का कार्य और प्रकाशनकार्य ३५

९. धर्मशिक्षा देनेवाली और साधना-सम्बन्धी मार्गदर्शन करनेवाली श्रव्य चक्रिकाओं, दृश्य-श्रव्य चक्रिकाओंका निर्माण करना ३९

१०. सनातन पंचांग, संस्कार-बही और सनातनके सात्त्विक उत्पाद ४०

११. विविधांगी आध्यात्मिक शोध ४१

११ अ. आधुनिक वैज्ञानिक उपकरणों और प्रणालियों का उपयोग कर किए गए प्रयोग ४१

११ आ. दोलकके (पेंडुलमके) सन्दर्भमें शोध ४५

११ इ. अनिष्ट शक्तियोंके सन्दर्भमें शोध ४६

११ ई. आध्यात्मिक उपचारोंकी अभिनव पद्धतियोंकी खोज ४६

११ उ. विकार-निर्मूलन हेतु उपयुक्त उपचार-पद्धतियोंकी खोज ४८

११ ऊ. अनिष्ट शक्तियोंके कारण हुए कष्टदायक परिवर्तन तथा अच्छी शक्तियोंके कारण हुए दैवी परिवर्तनों सम्बन्धी शोध ५०

११ ए. हिन्दू धर्मके आचार, धार्मिक कृत्य आदि की उपयुक्तता सिद्ध करनेवाले शोध ५१

११ ऐ. प्रार्थना, नामजप, विविध योगमार्ग आदि से होनेवाले लाभके सम्बन्धमें शोध ५१

११ ओ. विविध कलाओंके सात्त्विक प्रस्तुतीकरणके सन्दर्भमें शोध ५१

११ ओ १. चित्रकला और मूर्तिकला ५१

११ ओ २. अक्षर और अंकोंका लेखन ५२

११ ओ ३. रंगोलियां ११ ओ ४. मेंहदी ५२

११ ओ ५. संगीत और नृत्यकला ५३

११ औ. ज्योतिषशास्त्रके विविध प्रकारोंसे आध्यात्मिक शोध ५३

११ अं. प्राणी और वनस्पतियों का सात्त्विकताकी दृष्टिसे अध्ययन ५४

११ क. दैवी बालकोंकी पहचान और उनके सम्बन्धमें शोध ५४

११ ख. स्वयंके (परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीके) और अन्योंमें हुए परिवर्तन सम्बन्धी शोध ५४

११ ग. स्वयंके (परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीके) महामृत्युयोगका शोधपरक अध्ययन ५५

१२. आध्यात्मिक संग्रहालयके लिए आध्यात्मिक महत्त्वकी वस्तुओंका संरक्षण ५६

१३. सूक्ष्म ज्ञान-सम्बन्धी कार्य ५७

* सूक्ष्मरूपको समझनेकी क्षमताका विकास करनेकी प्रक्रिया खोज निकालना ५७

* साधकोंको अपौरुषेय सूक्ष्म-ज्ञान प्राप्त करना सिखाना ५९

१४. प्राचीन हिन्दू आरोग्यशास्त्र 'आयुर्वेद'का प्रसार और उसके माध्यमसे हिन्दू संस्कृतिका संवर्धन करना ६२

१५. स्व-भाषारक्षाके कार्य और उसके अलौकिक पहलुओंके विषयमें शोध ६२

१६. प्रखर हिन्दुत्वनिष्ठ नियतकालिक 'सनातन प्रभात'के माध्यमसे पत्रकारिताका कार्य ६३

१७. 'हिन्दू राष्ट्र'की (सनातन धर्म राज्यकी) स्थापनाका कार्य ६५

* लोकतन्त्रकी दुष्प्रवृत्तियोंके निर्मूलनका कार्य ६७

१८. आगामी भीषण आपातकालकी दृष्टिसे कार्य ७०

१९. परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीका सूक्ष्म-स्तरीय कार्य ७२

* भुवर्लोकसे सातवें पातालतककी अनिष्ट शक्तियोंसे सूक्ष्म युद्ध ७२

* ज्ञानशक्तिद्वारा हो रहा कार्य ७२

२०. परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीके कार्यकी प्रेरणासे प्रारम्भ हुआ कार्य ७८

२० अ. संगठन ७८

२० अ १. हिन्दू जनजागृति समिति ७८

२० अ २. स्पिरिच्युअल साइन्स रिसर्च फाउण्डेशन ८१

२० अ ३. हिन्दू विधिज्ञ परिषद ८३

२० आ. उपक्रम ८३

२० आ १. सनातन साधक-पुरोहित पाठशाला ८३

२० आ २. सनातन हिन्दू धर्मदीक्षा केंद्र ८४

२० आ ३. सनातन अध्ययन केंद्र ८५

२१. 'महर्षि अध्यात्म विश्वविद्यालय'की स्थापना ८५

२२. गुरुकुल समान आश्रमोंका निर्माण ८६

२३. परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीके कार्यके लिए गुरु, सन्त और ऋषियों के आशीर्वाद ! ९०

२३ अ. सन्त भक्तराज महाराजजीने डॉ. आठवलेजीको दिए आशीर्वाद ! ९०

२३ आ. सन्तोंके आशीर्वाद (वर्ष १९९६ से) ९१

२३ इ. महर्षिके आशीर्वाद (अप्रैल २०१४ से) ९१

२४. परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीके कार्यके विषयमें मान्यवरोंके उद्‌गार ९२

२५. परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीके कार्यके विषयमें जगद्‌गुरुपदके सन्तोंके गौरवोद्‌गार ! ९३

२६. परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीके कार्यके विषयमें महर्षिके गौरवोद्‌गार ! ९४

२७. परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीके कार्यको ईश्वरद्वारा प्राप्त आध्यात्मिक प्रमाणपत्र ! ९५

२८. परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीको अपने जीवनकार्यके विषयमें लगनेवाली कृतार्थता ! ९५

२९. परात्पर गुरु डॉ. जयंत आठवलेजीका गुरुकार्यके प्रति कृतज्ञताभाव ! ९८

卐 परिशिष्ट १ : परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीद्वारा स्वयं किया जा रहा नित्य और नैमित्तिक कार्य १००